डॉ. अम्बेडकर और समावेशी लोकतंत्र
संवैधानिक अधिकार एवं सामाजिक न्याय के परिपेक्ष्य में

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

डॉ. अम्बेडकर और समावेशी लोकतंत्र
संवैधानिक अधिकार एवं सामाजिक न्याय के परिपेक्ष्य में

डॉ. अमरनाथ पासवान

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

डॉ. अम्बेडकर और समावेशी लोकतंत्र संवैधानिक अधिकार एवं सामाजिक न्याय के परिपेक्ष्य में

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-81-946006-5-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

विषय–सूची

	प्राक्कथन	ix
	लेखक सूची	xi
1.	अम्बेडकर के दलित मुक्ति विमर्श के सन्दर्भ में वर्तमान दलित आंदोलन की कमियां एवं सुझाव *–प्रो. रमाशंकर आर्या*	1
2.	भारत में दलित सामाजिक आंदोलन को अंबेडकर का योगदान *–डॉ. अमरनाथ पासवान, मयंक चन्द्रा*	18
3.	सामाजिक न्याय के महायोद्धाः डॉ. अम्बेडकर *–अश्वनी कुमार*	28
4.	ब्राह्मणवादी पितृसत्ता से भारतीय स्त्री की मुक्ति हेतु अंबेडकर का संघर्ष *–डॉ. प्रमोद बागड़े*	39
5.	भारत का संविधान और समाजिक न्याय *–डॉ. प्रतिमा गोंड*	45
6.	डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय : एक विश्लेषण *–डॉ. शैलेश कुमार राम*	63
7.	कबीर और अंबेडकर के दर्शन में मानवीय मूल्य *–डॉ. विन्ध्यांचल मिश्र*	80
8.	बोधिसत्व डॉ. आंबेडकर का आधुनिक बौद्धधम्म मे योगदान *–डॉ. मनीष टी मेश्राम*	89

नमूना SAMPLE

9. अंबेडकर का धर्मान्तरण आंदोलन और समकालीन भारत में इसके माध्यम से दलित मुक्ति की संभावनायें 103
—मनीष चन्द्रा

10. गाँधी और अंबेडकर के जाति विषयक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन 115
—माला मेश्राम

11. श्रमिक एवं कर्मचारी कल्याण में बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर का योगदान 128
—निर्भय नारायण

12. भारतीय सामाजिक न्याय के पुरोधा डॉ. भीमराव अम्बेडकर : एक चिन्तन 140
—डॉ. इन्दमणि सिंह

13. भारतीय चिन्तक के रूप में अम्बेडकर का प्रजातंत्र और संविधानवाद पर विचार 151
—डॉ. दीपक कुमार राय

14. डॉ. भीमराव अम्बेडकर और बुद्ध धर्म 159
—पारुल वरनवाल

15. राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद और बाबा साहेब 167
—रजनीकान्त इन्द्रा

16. भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि में वर्ण व्यवस्था, जाति एवं आर्थिक विषमता पर डॉ. भीमराव आम्बेडकर का प्रहार 184
—संजीव कुमार

17. सामाजिक न्याय के प्रति बी.आर. अम्बेडकर का दर्शन 194
—डॉ. प्रभात कुमार

18. ज्ञान के प्रतीक बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर 205
—डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'

SAMPLE

19. राष्ट्र निर्माण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भूमिका 212
—डॉ. सुरेश कुमार

20. भारत में प्रजातांत्रिक मूल्यों के विकास में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का योगदान 219
—डॉ. चन्द्रशेखर पासवान

21. डॉ. अम्बेडकर और सामाजिक न्याय 240
—यादवेन्द्र कुमार आर्य

22. वर्तमान भारत में मजदूर एवं श्रमिक वर्ग की समस्याएं एवं डॉ. अम्बेडकर के योगदानों की प्रासंगिकता 250
—रामचंद्र कुमार

23. मीडिया और डॉ अंबेडकर 263
—डॉ. रतन लाल

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

सन 2004 में कोलंबिया विश्वविद्यालय ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों की एक सूची प्रकाशित की थी जिसमे प्रथम नाम डॉ. भीमराव आंबेडकर का था और यह किसी आश्चर्य से कम नहीं है क्योंकि जिस व्यक्ति को भारत में महज दलितों का नेता के रूप में समझा गया दुनिया की एक श्रेष्ठ संस्थान के द्वारा विश्व के अग्रणी विद्वानों की सूची में पहले स्थान पर रखा जाता है। वास्तव में आंबेडकर को यह सम्मान महज किसी विषय के ज्ञाता होने के नाते नहीं प्राप्त हुआ है बल्कि उनके समय की व्याप्त उस घोर निराशावादी परिस्थितियों के खिलाफ उनकी प्रखर आवाज और मार्गदर्शन ने जो सामजिक न्याय की प्रतीक्षा में कोल्हू के बैल की तरह पिस रहे करोड़ों लोंगों के लिए शक्ति और प्रेरणा का स्रोत बनी के प्रति सम्मान था। 15 अगस्त 1947 को भारत एक आजाद मुल्क बना। लाखों लोंगों ने इसके लिए कुर्बानियां दी। एक नये भारत के निर्माण की चुनौतियां सामने थीं। एक ऐसा भारत जो जाति, धर्म, पहचान, भेदभाव से मुक्त हो जिसमे सबके लिए एकसमान जीवन अवसर उपलब्ध हों और इस नये भारत के निर्माण की सबसे अहम जिम्मेवारी डॉ. आंबेडकर को दी गई और वह थी भारत के लिए एक संविधान की निर्माण की, एक ऐसा संविधान जिसमे कोई भी छुटे नहीं। यह आंबेडकर के ज्ञान एवं व्यापक अनुभवों का ही प्रतिफल था की दुनियां की सबसे विस्तृत एवं उपयुक्त संबिधान भारत का बना और सन 1949 में लागु हुवा एक ऐसा संविधान जिसकी आत्मा ही भारत को एक समावेशी लोकतंत्र के रूप में स्थापित करना है स जो आज केवल भारत की ही नहीं बल्कि पुरे विश्व की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में है क्योंकि वर्तमान समय समावेशी एवं सतत समाज की स्थपना पर ही केन्द्रित है। डॉ. आंबेडकर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बड़े ही जोर

नमूना SAMPLE

देकर कहा था की संविधान कितना ही अच्छा क्यों न हो इसकी सफलता पुर्णतः इसके लागू करवाने वालों पर निर्भर करती है और इसके बिना यह महज कागज के अलावे कुछ नहीं। डॉ. आंबेडकर की चिंता सही थी क्योंकि आज भी संविधान एवं संवैधानिक अधिकारों को कमजोर करने के निरंतर प्रत्यक्ष दृअप्रत्यक्ष प्रयास हुवें हैं और आज भी हो रहें है। साथ ही समाजिक न्याय के विषय हमेशा से चिंता के विषय रहें है। वास्तव में संवैधानिक अधिकारों के अल्पीकरण एवं सामाजिक न्याय को अनदेखी कर भारत जैसे बहुसांस्कृतिक विशेषताओं वाले देश को एक विकसित एवं प्रगतिशील राष्ट्र बनाना संभव नहीं है। अतः वर्तमान सन्दर्भ में भारत को एक समावेशी लोकतंत्र के रूप में आगे बढ़ना सबसे जरुरी है। डॉ. आंबेडकर का भारतीय लोकतंत्र में योगदान, समावेशी लोकतंत्र के उभरते विषयों, संवैधानिक अधिकारों का हनन, सामाजिक न्याय आदि एक परिप्रेक्ष्य में ही वर्तमान पुस्तक का संपादन किया गया है जिसमे उक्त विषयों से सम्बंधित लगभग देश भर विभिन विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थानों के शिक्षकों एवं शोधार्थियों तथा सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों के लगभग दो दर्जन से जादा आलेखों एवं शोध पत्रों का संकलन कर संपादन किया गया है।

डॉ. अमरनाथ पासवान

SAMPLE

लेखक सूची

1. **डॉ. अमरनाथ पासवान,** सहायक प्रोफेसर, सह सहायक निदेशक सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
2. **मयंक चन्द्रा,** डिस्टिंगुइश्ड मेंबर, इंटरनेशनल कौंसिल ऑफ जुरिस्ट, लंदन
3. **प्रो. रमाशंकर आर्या,** पूर्व कुलपति, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार
4. **डॉ. प्रमोद कुमार बागड़े,** दर्शन और धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
5. **डॉ. प्रतिमा गोंड,** असिस्टेंट प्रोफेसर, महिला महाविद्यालय सामाजिक विज्ञान संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
6. **डॉ. शैलेश कुमार राम,** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सीवान (जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार)
7. **डॉ. विन्ध्यांचल मिश्र,** सहायक प्रवक्ता (हिंदी विभाग) शहीद भगत सिंह (सांध्य) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
8. **मनीष चन्द्रा,** कार्यकारी संपादक, बहिष्कृत भारत
9. **माला मेश्राम,** स्नातकोत्तर (समाज कार्य) गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर
10. **निर्भय नारायण,** शोध छात्र (पी॰एच॰डी॰) सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र सामाजिक विज्ञान संकाय (बी॰एच॰यू॰), वाराणसी

NOT SAMPLE

11. **डॉ. इन्दमणि सिंह,** (असिस्टेंट प्रोफेसर) स्नातकोत्तर, राजनीति शास्त्र विभाग, शांति प्रसाद जैन महाविद्यालय, सासाराम सासाराम, रोहतास (बिहार)
12. **डॉ. दीपक कुमार राय,** शोधार्थी, स्नातकोत्तर, (राजनीति शास्त्र) वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
13. **पारुल वरनवाल,** एम. फिल (सबाल्टर्न स्टडीज) सामाजिक बहिष्करण और समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र सामाजिक विज्ञान संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
14. **रजनीकान्त इन्द्रा,** संस्थापक, एलीफ
15. **संजीव कुमार,** शोधार्थी, रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)
16. **डॉ. प्रभात कुमार,** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, बी आर एम कॉलेज, मुंगेर, बिहार
17. **डॉ. सुनील कुमार, 'सुमन',** प्रभारी, कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
18. **डॉ. सुरेश कुमार,** (सहायक आचार्य) बी0एड0/एम0एड0 विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली, उ0प्र0
19. **डॉ. चन्द्रशेखर पासवान,** सहायक प्रोफेसर, गौतम बुद्ध यूनिव. र्सिटी, ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0)
20. **यादवेन्द्र कुमार आर्य,** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, गया प्रसाद स्मारक राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़ (उ0प्र0)
21. **अश्वनी कुमार,** शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
22. **रामचंद्र कुमार,** सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, आर. एस. पी. कॉलेज, झरिया (धनबाद) झारखण्ड

नहीं है SAMPLE

23. **डॉ. रतन लाल,** एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

24 **डॉ. मनीष टी मेश्राम,** असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज एंड सिविलाइजेशन, गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा (उत्तर प्रदेश)

नमूना • SAMPLE

1

अम्बेडकर के दलित मुक्ति विमर्श के सन्दर्भ में वर्तमान दलित आंदोलन की कमियां एवं सुझाव

प्रो. रमाशंकर आर्या

आजादी की लड़ाई के दौरान ही भारत के दलितों में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रयास शुरू हो गए थे। दक्षिण भारतीय चिंतक पेरियार रामासामी नायकर तथा ज्योतिबा फूले इस परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुके थे। इन दोनों चिंतकों की परिवर्तनकामी चिंतनधारा ने दक्षिण भारत के दलितों के साथ साथ उत्तर भारत के दलित समाज को भी आंदोलित किया था। इन चिंतकों द्वारा ब्राह्मणवादी संस्कृति के विरूद्ध चलाये गये आंदोलन ने दलित समाज के जीवन में एक नयी चेतना का संचार किया था। यही नयी चेतना आगे चलकर दलित समाज में परिवर्तन का आधार बनी। फलतः दलित समाज सामाजिक विसंगतियों एवं सामाजिक बुराईयों से मुक्ति की दिशा में भी अग्रसर होना शुरू हो गया। दलित समाज में आयी परिवर्तन की इस नयी चेतना ने दलित समाज में कई समाज सुधारकों एवं चिंतकों को जन्म दिया था। दलितों के महानायक डॉ. अंबेडकर भी ऐसे ही समय में उभरकर दलित नेता के रूप में भारतीय समाज के सामने आये थे।

TEST SAMPLE

डॉ. अंबेडकर ने भारतीय समाज के अंतर्विरोधों का गहन अवलोकन एवं उन पर चिंतन किया था और इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि इस देश के दलितों को राजनीतिक आजादी की अपेक्षा सामाजिक और आर्थिक आजादी की अधिक जरूरत है। बाद में इनकी स्पष्ट मान्यता उभरकर सामने आयी कि सामाजिक आजादी के बगैर राजनीतिक आजादी का कोई मूल्य नहीं है। इसी विचार को केंद्र में रखकर वे अपना वैचारिक आंदोलन भारतीय समाज में चलाते रहे। देश आजाद हुआ। भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. अंबेडकर दलित उद्धार के एजेंडे को लेकर सक्रिय रहे और देश के प्रथम कानून मंत्री रहते हुए भी यह प्रयास करते रहे कि दलित समाज भारतीय समाज की मुख्य धारा में शामिल होकर इस देश के अन्य नागरिकों की तरह सामान्य तरीके से अपना जीवन यापन करना सीख ले।

अम्बेडकर का दलित मुक्ति विमर्श

डॉ. अंबेडकर के विचार में दलित चेतना के विकास का अंतिम लक्ष्य मनुष्य के जीने के लिए समानता, भाईचारा और स्वतंत्रता की आवश्यक शर्तों की प्राप्ति ही मानी जानी चाहिए। समानता और भाईचारा के अर्थ में ही यह निहित है कि मानवीय संबंधों के स्तर पर कोई बड़ा या छोटा नहीं है, न ही जन्म के कारण और न ही धन–बल के अथवा भाग्य–भगवान के कारण। अंबेडकर की भारतीय समाज के संदर्भ में एक शोषणरहित, जातीय भेदभाव रहित, मानवीय समाज की परिकल्पना में समाज में किसी की भी श्रेष्ठता या वर्चस्व के नकार का तथ्य निहित है। यही उच्चता, श्रेष्ठता या वर्चस्वता का नकार समाज में भाईचारे की भावना को पुष्ट करता है। एक–दूसरे के सहयोगी बनकर समाज में जीना, समूह में जीना ही इसका मुख्य भाव है। अंबेडकर के अनुसार ऐसी चेतना के तहत व्यक्ति प्रमुख न होकर समाज प्रमुख होता है और लोगों में सामाजिकता का विकास ही सुखद जीवन का आधार बनता है। अंबेडकर जानते थे कि समानता के बिना स्वतंत्रता की अवधारणा फल–फूल नही सकती।

वस्तुतः भारत में दलित चेतना का यही उपरोक्त सैद्धांतिक पक्ष है जिसे पेरियार, महात्मा ज्योतिबा फूले और डॉ. बाबा साहब अंबेडकर ने हमारे समाज को प्रदान किया है। ज्योतिबा फूले की लिखी हुई पुस्तक 'गुलामगिरी' शूद्रों या दलितों की मुक्ति का घोषणापत्र ही है। ज्योतिबा फूले की परिवर्तनकामी चिंतन परंपरा को आगे बढ़ाते हुए बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर ने अपने तीन प्रमुख हथियारों को अपनाने की सलाह दी है– शिक्षा, संगठन और संघर्ष। आज राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक क्षेत्र में जो भी हस्तक्षेप दलितों का हुआ है या आगे होगा, वह इसी पर आधारित होगा कि वे शिक्षा में कितने आगे आए, सामाजिक परिवर्तन के मूल आधार के रूप में अपना संगठन खड़ा किया और कितनी दूर तक उस संगठन के माध्यम से अपने संघर्षों को आगे ले जाने में सफल हुए। चूंकि इन आधारों को पुष्ट किये बिना सत्ता प्राप्त होने पर भी सामाजिक बदलाव संभव नही है।

बाबा साहेब ने एक ऐसे दलित समुदाय व एक ऐसे बहुजन समाज की अवधारणा दी जो आत्मसम्मान से लैस होने के साथ–साथ समानता, भाईचारा एवं आजादी के लक्ष्य को हासिल करने के लिए शिक्षा, संघर्ष और संगठन के लिए कटिबद्ध हो। जो अपनी गुलामी का अहसास कर अपनी हीन भावनाओं को झटककर, बराबरी का दावा ठोकने का दम भरे, जो दोस्ती का हाथ थामने को तैयार हो पर उसे किसी दाता का दयावान हाथ स्वीकार्य न हो। यानी एक ऐसे बहुजन समाज या चैतन्य दलित व्यक्ति की अवधारणा जिसे अपने कर्त्तव्य और दायित्व दोनों की समझ हो। उनकी इस अवधारणा में वर्चस्ववादी मानसिकता का कोई स्थान नहीं था। इसलिए दलित आकांक्षाओं के भारत की चर्चा करना दरअसल बाबा साहेब द्वारा निर्धारित दिशा के भारत की चर्चा ही है जिसके केंद्र में संवेदनशील मनुष्य है। इस स्वप्न के तहत दलित 'अप्प दीपो भवः' के सूत्र को अपनाकर नेतृत्वकारी भूमिका अदा करेगा। वह बहुजन समाज की अवधारणा के तहत अपने आंदोलन का विस्तार करेगा। वह संगठित होगा ताकि धारदार आंदोलन चला सके और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों में भागीदारी करने हेतु